प्रश्न-1. 1757 से 1857 के बीच भारत में ब्रिटिश नीतियों के आर्थिक प्रभाव पर चर्चा करें। (200 शब्द)

उत्तर:

भूमिका

1757 से 1857 के बीच ब्रिटिश नीतियों का भारत पर गहरा आर्थिक प्रभाव पड़ा। उपनिवेशवादी शासन ने भारत के संसाधनों का योजनाबद्ध दोहन किया। ब्रिटिश हितों को साधने के लिए आर्थिक संरचना को बदला गया, जिससे विभिन्न क्षेत्रों पर गंभीर प्रभाव पड़ा।

- **कृषि शोषण:** जमींदारी व्यवस्था और स्थायी बंदोबस्त (1793) ने भूमि के अधिकार कुछ गिने-चुने हाथों में केंद्रित कर दिए। इससे किसानों पर भारी कर लगाया गया, जिससे कृषि संकट बढ़ा। राजस्व वसूली उत्पादन से अधिक थी, जिससे किसान कर्ज और भूमिहीनता की चपेट में आ गए और कृषि विकास बाधित हुआ।
- **औद्योगिक अवनति:** भारत के पारंपरिक उद्योग, जैसे कपड़ा, जहाज निर्माण और हस्तशिल्प, बुरी तरह प्रभावित हुए। ब्रिटिश नीतियों ने भारतीय निर्यात पर भारी कर लगाया, जबकि सस्ते ब्रिटिश सामानों से बाजार भर दिए गए। इससे भारतीय उद्योगों, विशेषकर कपड़ा उद्योग का पतन हुआ, जो कभी वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध था।
- **व्यापार पर प्रभाव:** ब्रिटिशों ने व्यापार मार्गों और बंदरगाहों पर नियंत्रण किया। भारत से कच्चे माल, जैसे- कपास, रेशम और नील का निर्यात बढ़ा, जबकि महंगे ब्रिटिश सामान आयात किए गए। इससे व्यापार असंतुलन हुआ और भारत की धन-निकासी तेज हुई।
- **शोषण के लिए बुनियादी ढाँचा विकास:** रेलवे, सड़कें और बंदरगाह बनाए गए, लेकिन यह भारत के आंतरिक विकास के लिए नहीं, बल्कि संसाधनों के दोहन और ब्रिटिश वस्तुओं की आवाजाही के लिए थे।
- **धन-निकासी का सिद्धांत:** दादाभाई नौरोजी ने अपने धन-निकासी सिद्धांत में भारत के धन को ब्रिटेन स्थानांतरित करने की प्रक्रिया पर प्रकाश डाला; धन-निकासी के कारण देश निर्धन होता गया।

निष्कर्ष

- 1757 से 1857 के बीच ब्रिटिश नीतियों ने भारत की आर्थिक संरचना को नष्ट कर दिया और देश को दीर्घकालिक आर्थिक पिछड़ेपन की ओर धकेल दिया।

ChronicleIAS

प्रश्न-2. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सुभाष चंद्र बोस के योगदान पर चर्चा करें। क्या स्वतंत्रता के प्रति उनका दृष्टिकोण गांधी और कांग्रेस से अलग था? (200 शब्द)

उत्तर:

भूमिका

सुभाष चंद्र बोस भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख नेता थे, जो अपने साहसिक और गतिशील दृष्टिकोण के लिए प्रसिद्ध थे। उनके योगदान ने भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई की दिशा को गहराई से प्रभावित किया। उनका दृष्टिकोण महात्मा गांधी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से भिन्न था।

आजाद हिन्द फौज (INA) का गठन

- बोस का सबसे महत्वपूर्ण योगदान 1942 में आजाद हिन्द फौज (INA) का गठन था, जो जापानी सहायता से स्थापित हुई। उन्होंने INA की एक सैन्य बल के रूप में कल्पना की, जो ब्रिटिश शासन को सीधे चुनौती देता। INA ने दक्षिण-पूर्व एशिया में जापानी सेना के साथ मिलकर लड़ाई लड़ी, जिससे भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक नया चरण शुरू हुआ।

नेतृत्व और विचारधारा

- बोस सशस्त्र राष्ट्रवाद में विश्वास रखते थे और गांधी द्वारा अपनाई गई अहिंसा के विपरीत थे। उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ एकजुट मोर्चा बनाने का प्रयास किया और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान धुरी शक्तियों (Axis Powers) से अंतरराष्ट्रीय समर्थन मांगा। गांधी के अहिंसा पर बल देने के विपरीत, बोस मानते थे कि स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए सशस्त्र संघर्ष आवश्यक है।

गांधी और कांग्रेस से मतभेद

- बोस का दृष्टिकोण अक्सर कांग्रेस नेतृत्व और गांधी से टकराता था। गांधी ने अहिंसात्मक नागरिक अवज्ञा पर जोर दिया, जबकि बोस ने एक आक्रामक सैन्य रणनीति अपनाई। बोस ने बाह्य सहायता और सशस्त्र संघर्ष को स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अनिवार्य माना।

आयाम	सुभाष चंद्र बोस	महात्मा गांधी
दृष्टिकोण एवं विरोध का तरीका	आजाद हिन्द फौज (INA) का गठन और नेतृत्व किया; द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान धुरी शक्तियों (Axis Powers) से समर्थन मांगा।	अवज्ञा (सत्याग्रह) पर जोर दिया। सशस्त्र विद्रोह का समर्थन नहीं किया।
ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति रुख	सीधे टकराव और विदेशी गठबंधन का समर्थन किया।	शांतिपूर्ण तरीकों से ब्रिटिश अधिकार को कमजोर करने का प्रयास किया।
कांग्रेस में नेतृत्व	फॉरवर्ड ब्लॉक का नेतृत्व किया; अक्सर कांग्रेस नेतृत्व से मतभेद रहे।	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) का नेतृत्व किया; जन आंदोलन पर ध्यान केंद्रित किया।
अंतरराष्ट्रीय गठबंधन	अंतरराष्ट्रीय समर्थन मांगा, विशेष रूप से जापान और जर्मनी से।	स्वदेशी नेतृत्व पर जोर दिया; विदेशी गठबंधन से बचते रहे।
दार्शनिक अंतर	उग्र दृष्टिकोण; आवश्यकता पड़ने पर हिंसा को उचित मानते थे।	मध्यम दृष्टिकोण; अहिंसा और नैतिक प्रतिरोध के प्रति प्रतिबद्ध।
स्वतंत्रता संग्राम पर प्रभाव	स्वतंत्रता संग्राम में सैन्य दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया।	जन आंदोलन का नेतृत्व किया और स्वतंत्रता के लिए वैचारिक आधार तैयार किया।

निष्कर्ष

सुभाष चंद्र बोस के योगदान ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक सैन्य और उग्रवादी आयाम जोड़ा। उनकी INA की नेतृत्व क्षमता और सशस्त्र प्रतिरोध के प्रति प्रतिबद्धता ने उन्हें गांधी और कांग्रेस के अहिंसात्मक दृष्टिकोण से अलग बना दिया।

प्रश्न-3. "भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जनजातीय विद्रोहों के महत्व को उजागर करें।" (125 शब्द)

उत्तर:

भूमिका

जनजातीय विद्रोह भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण थे, जो ब्रिटिश शोषण के खिलाफ स्वदेशी प्रतिरोध का प्रतीक थे। इन विद्रोहों ने सामाजिक-आर्थिक समस्याओं को उजागर किया और स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान दिया।

आर्थिक शोषण और जनजातीय समस्याएं

- ब्रिटिश नीतियों, जैसे भू-राजस्व प्रणाली और वन कानूनों, ने जनजातीय जीवन को बुरी तरह प्रभावित किया। भूमि से बेदखली, गरीबी और उत्पीड़न ने विद्रोह को जन्म दिया।

महत्वपूर्ण विद्रोह

1. **संथाल विद्रोह (1855-1856):** सिद्धू और कान्हू के नेतृत्व में जमींदारों और ब्रिटिश कर संग्रहकर्ताओं के खिलाफ विद्रोह।
2. **मुंडा विद्रोह (1899-1900):** बिरसा मुंडा के नेतृत्व में जनजातीय भूमि को अतिक्रमण से बचाने का प्रयास।
3. **रम्पा विद्रोह (1922-1924):** कठोर वन कानूनों के विरोध में, अल्लूरी सीताराम राजू के नेतृत्व में।
4. **गोंड विद्रोह (1858-1859):** रानी दुर्गावती के नेतृत्व में राजस्व संग्रह और शोषण के खिलाफ।
5. **कोल और भील विद्रोह:** कठोर नीतियों और भूमि बेदखली के विरोध में विद्रोह।

निष्कर्ष

जनजातीय विद्रोह आर्थिक शोषण के खिलाफ संघर्ष और स्वदेशी समुदायों में राष्ट्रीय भावना को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण थे।

Chronicle IAS

प्रश्न-4. भारत को स्वतंत्रता के बाद रियासतों को एकीकृत करने में आने वाली चुनौतियों का विश्लेषण करें।
(125 शब्द)

उत्तर:

भूमिका

1947 में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद, 500 से अधिक रियासतों को भारतीय संघ में एकीकृत करना भारत के लिए एक बड़ी चुनौती थी। ये रियासतें स्थानीय शासकों द्वारा शासित थीं, जिन्हें ब्रिटिश शासन के अधीन काफी स्वायत्तता प्राप्त थी।

- **राजनीतिक चुनौतियां:** रियासतों के पास भारत या पाकिस्तान में शामिल होने या स्वतंत्र रहने का विकल्प था। कुछ शासकों, जैसे हैदराबाद के निजाम और जम्मू-कश्मीर के महाराजा हरि सिंह, ने भारत में विलय से हिचकिचाहट या इनकार किया। इससे अस्थिरता और विघटन का खतरा पैदा हुआ।
- **कूटनीतिक प्रयास:** गृह मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने रियासतों के साथ बातचीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अधिकांश शासकों ने विलय पत्र (Instrument of Accession) पर हस्ताक्षर किए, जिससे वे विशेष शर्तों के तहत भारत में शामिल हुए। हालांकि, हैदराबाद और जूनागढ़ जैसी रियासतों को बलपूर्वक हस्तक्षेप या समझाने की आवश्यकता पड़ी।
- **सैन्य चुनौतियां:** सहज एकीकरण सुनिश्चित करने के लिए भारत को कुछ मामलों में सैन्य कार्रवाई करनी पड़ी। हैदराबाद पुलिस कार्रवाई (1948) और कश्मीर संघर्ष (1947) ऐसे उदाहरण हैं, जहां सैन्य हस्तक्षेप आवश्यक था।
- **प्रशासनिक चुनौतियां:** एकीकरण के बाद, शासन को पुनर्गठित करना और स्थानीय प्रणालियों को भारतीय प्रशासनिक ढांचे के साथ समायोजित करना एक बड़ी चुनौती थी। क्षेत्रीय विवाद और राज्यों के पुनर्गठन ने अतिरिक्त बाधाएं उत्पन्न कीं।

निष्कर्ष

- इन चुनौतियों के बावजूद, कूटनीतिक कौशल, सैन्य हस्तक्षेप और राजनीतिक दृढ़ता के माध्यम से भारत ने रियासतों को सफलतापूर्वक एकीकृत किया, अपनी क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता सुनिश्चित की।

ChronicleIAS

प्रश्न-5. वर्साय की संधि (1919) का विश्लेषण करें और चर्चा करें कि यह द्वितीय विश्व युद्ध का कारण कैसे बनी। (200 शब्द)

उत्तर:

भूमिका

वर्साय की संधि (1919) ने औपचारिक रूप से प्रथम विश्व युद्ध को समाप्त किया और जर्मनी पर कठोर शर्तें लगाईं। इस संधि की शर्तों ने द्वितीय विश्व युद्ध के लिए अनुकूल परिस्थितियां उत्पन्न कीं।

संधि की मुख्य शर्तें

संधि ने जर्मनी पर कड़ी पाबंदियां लगाईं, जिनमें शामिल थीं:

- **क्षेत्रीय हानि:** जर्मनी को अलसैस-लोरेन को फ्रांस को सौंपना पड़ा और अपनी उपनिवेशीय भूमि छोड़नी पड़ी।
- **सैन्य प्रतिबंध:** जर्मन सेना को 100,000 सैनिकों तक सीमित कर दिया गया और जबरन भर्ती पर रोक लगा दी गई।
- **युद्ध अपराध धारा:** धारा 231 के तहत जर्मनी पर युद्ध की पूरी जिम्मेदारी डाली गई, जिससे राष्ट्र का अपमान हुआ और राष्ट्रवाद भड़क उठा।
- **युद्ध हर्जाना:** जर्मनी को मित्र राष्ट्रों को भारी युद्ध हर्जाना चुकाना पड़ा, जिससे उसकी अर्थव्यवस्था पर भारी बोझ पड़ा।

जर्मनी और यूरोप पर प्रभाव: इस संधि ने जर्मनी में व्यापक असंतोष उत्पन्न किया। जर्मन जनता ने इन शर्तों को अन्यायपूर्ण और अपमानजनक माना। इस असंतोष का फायदा उठाकर नाजी पार्टी और एडोल्फ हिटलर ने संधि को पलटने के वादे के साथ जन समर्थन प्राप्त किया।

आर्थिक परिणाम: भारी हर्जाने और क्षेत्रीय नुकसान ने जर्मनी की अर्थव्यवस्था को बुरी तरह प्रभावित किया। इसके परिणामस्वरूप मुद्रास्फीति और सामाजिक अशांति हुई। इस आर्थिक अस्थिरता ने जर्मनी और इटली में अतिवादी आंदोलनों, विशेषकर फासीवाद, को बढ़ावा दिया।

निष्कर्ष

- वर्साय की संधि ने जर्मनी में असंतोष, आर्थिक अस्थिरता और राजनीतिक चरमपंथ को बढ़ावा देकर द्वितीय विश्व युद्ध की नींव रखी। यह संधि स्थायी शांति स्थापित करने में विफल रही और 1939 में वैश्विक संघर्ष के प्रकोप का कारण बनी।

ChronicleIAS